ओम जय जय गोमाता

ओम ! जय जय गोमाता, मैया जय जय गोमाता ।
पाप शाप दुःख हरणीं, सुखों की दाता ।।

क्षीरसिन्धु मंथन से, प्रगटी जो गैया ।।
कामधेनूं वहीं नंदा, वही सुरभि मैया-जय०

रुद्रमात, वसुपुत्री, बहनां अदितिनंदनां ।।
उसी गोवंश गोधन की, कर रहा जग वन्दना- जय०

अखिल विश्व की पालक, फल चारों दायिनी ।।
आयु ओज बढ़ावे, रस अमृत खानी-जय०

सुर नर रिषि मुनि पूजित, गौ पूजित धाता ।।
गोसेवा गोदर्श से, भव भय टर जाता- जय०

धर्म कर्म की नैया, गौ अति हितकारी ।।
गोबर दूध गोमूत्र, औषधि गुणकारी-जय०

जीवनधन गोमाता, गौ सम्मान करो ।।
गो-गोविन्द गोपाला, का गुणगान करो-जय०

जहां गोवध गोहत्या, दुःख वहां वास करें ।।
जहां गोसदन गोशाला, देव निवास करें - जय०

कर गोसेवा पूजा, आरती जो गावे ।।
कहे मधुप गो सहारे, भवजल तर जावे- जय०

कवि : सुप्रसिद्ध लेखक एवं संकीर्तनाचार्य श्री केवल कृष्ण 'मधुप' (मधुप हरि जी महाराज) अमृतसर (9814668946)

https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/35394/title/om-jai-gau-mata-gau-maiya-aarti-special-on-Gopashtami

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |